धरती

हम सब का घर



आशुतोष उपाध्याय

धरती: हम सब का घर/ आशुतोष उपाध्याय

सितम्बर 2023: निःशुल्क वितरण के लिए
(उपयोग करने पर कृपया स्रोत का अवश्य उल्लेख करें।)

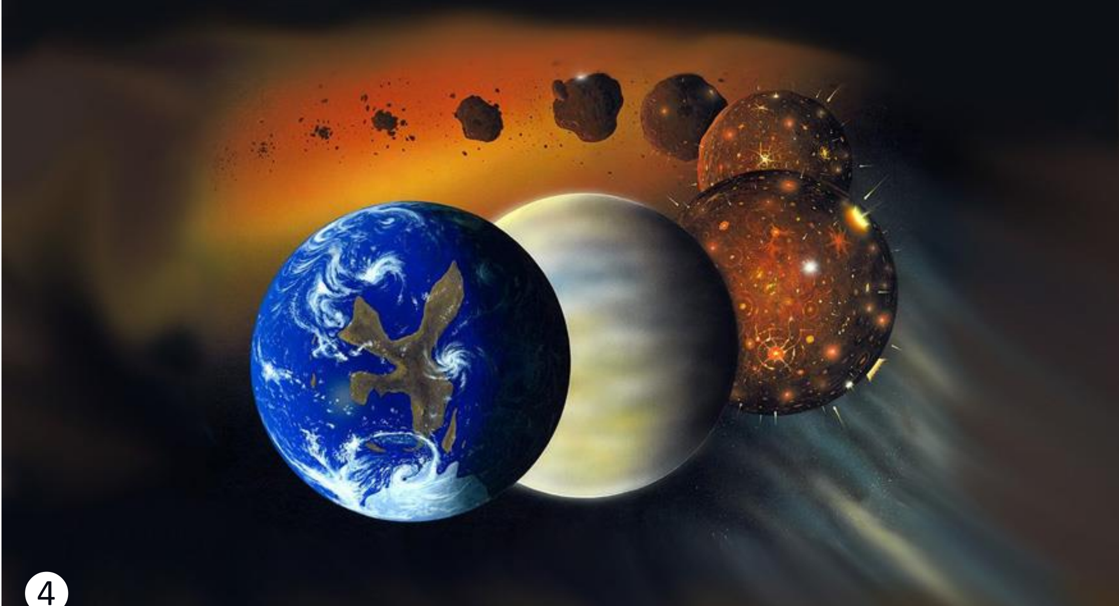
सभी चित्र इन्टरनेट से साभार लिए गए हैं।

प्रकाशक:
बाल विज्ञान खोजशाला समिति
सत्य निकेतन, बेरीनाग (उत्तराखण्ड)

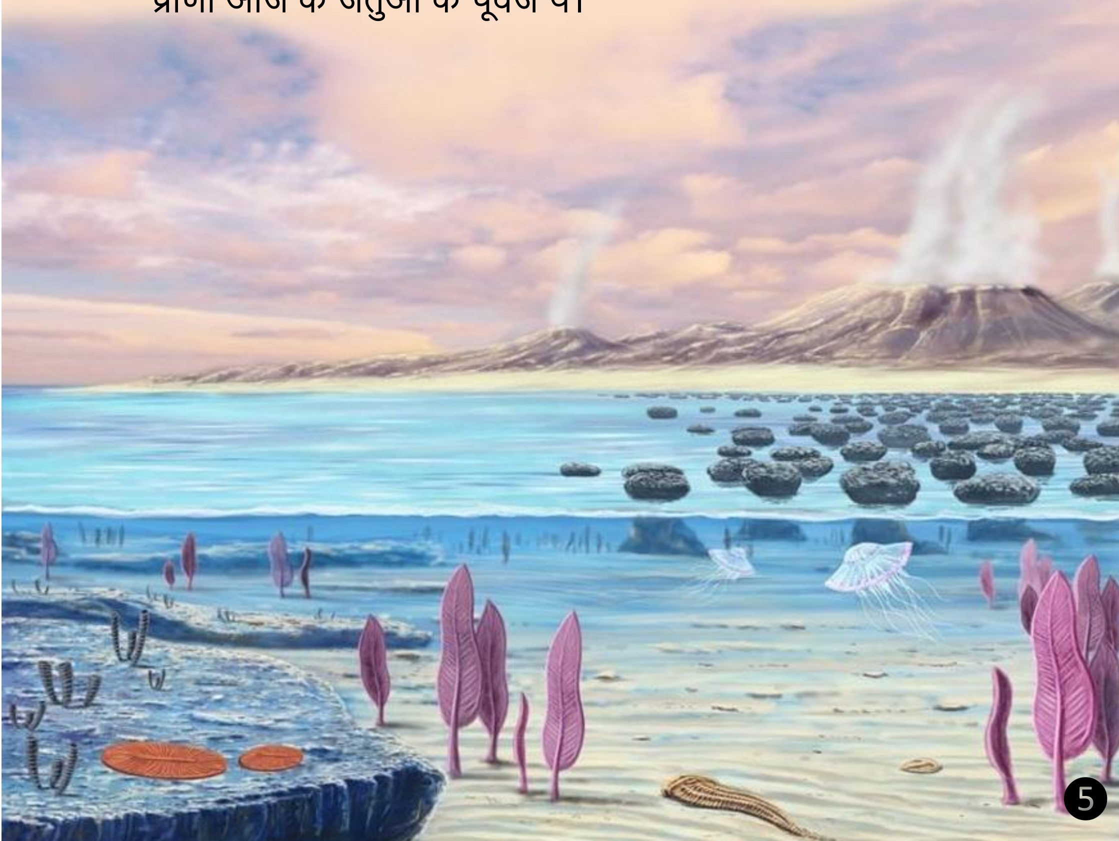
धरती हम सब का घर है। क्या आपने कभी सोचा कि इसका जन्म कब हुआ? और फिर यह किस तरह वैसी बनी, जैसी आज हमें दिखाई देती है? धरती हमेशा से आज जैसी नहीं थी। आइए इसके जन्म से अब तक की रोचक यात्रा के बारे में जानते हैं।



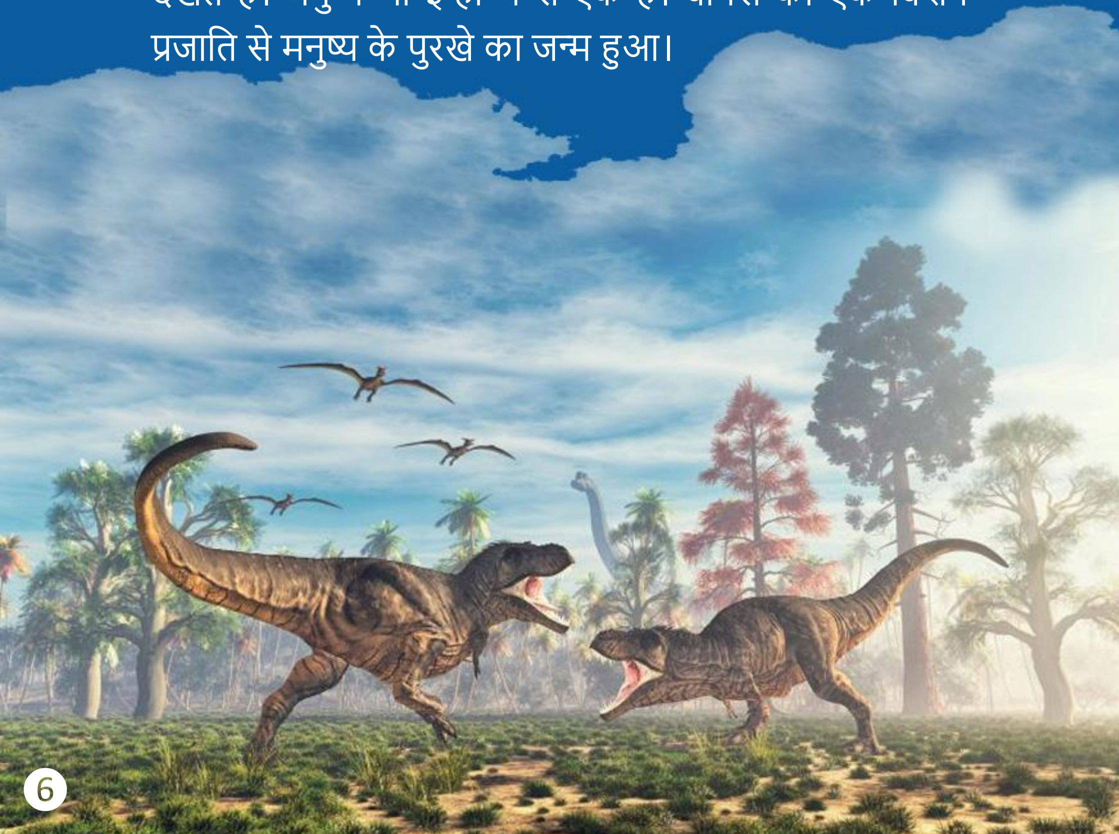
पृथ्वी यानी हमारी धरती का जन्म आज से करीब साढ़े चार अरब वर्ष पहले हुआ था। इसकी शुरुआत हमारे सौरमण्डल के उद्भव से जुड़ी हुई है। गैसों का घूमता हुआ एक महाविशाल गुबार अपने भार के कारण टूटा और अंतरिक्ष में बिखर गया। बिखरे हुए बड़े टुकड़ों ने ग्रहों का रूप लिया और बीच की गर्म गैसें सूर्य में बदल गयीं। इन ग्रहों में हमारी धरती भी थी, जो पहले खौलते हुए लावा का गोला थी। अत्यंत गर्म लावा के इस सूप में भारी उथल-पुथल चल रही थी, जिस कारण नए-नए रासायनिक तत्व जन्म ले रहे थे। धीमे-धीमे पृथ्वी ठंडी पड़ती गई और अंत में ठोस ग्रह में बदल गयी। आगे इसमें कई आश्चर्यजनक घटनाएं घटने वाली थीं।



लगभग साढ़े तीन अरब वर्ष पहले समुद्र में जीवन के सबसे सरल रूप ने जन्म लिया। ये बहुत छोटे और आँखों से न दिखने वाले एक कोशिकीय जीव थे। आज हम इन्हें बैक्टीरिया के नाम से जानते हैं। समय के साथ धरती की आबोहवा बदली और इस बदलाव ने जीवों को भी बदल दिया। एक कोशिकीय सरल जीवन से बहु कोशिकीय जटिल जीवन विकसित हुआ। इनमें से कुछ ने सूर्य के प्रकाश व थोड़े रसायनों की मदद से भोजन बनाना सीख लिया। इस तरह पेड़-पौधों के पुरखे अस्तित्व में आये। धरती की आबोहवा लगातार बदल रही थी। धीरे-धीरे धरती में ऑक्सीजन गैस की मात्रा बढ़ने लगी। इस बदलाव ने उन प्राणियों को जन्म दिया, जो साँस में ऑक्सीजन लेते थे। ये प्राणी आज के जंतुओं के पूर्वज थे।



धरती के इतिहास में एक समय ऐसा भी आया, जब यहाँ विशालकाय जीव विचरण करते थे। इन जीवों को आज हम डायनासोर के नाम से जानते हैं। वैज्ञानिक बताते हैं कि करीब साढ़े आठ करोड़ साल तक डायनासोर धरती पर राज करते रहे। फिर कुछ ऐसा घटा कि धरती से उनका नामोनिशान मिट गया। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि एक विशाल उल्कापिंड के पृथ्वी के टकराने से ऐसा हुआ होगा। कुछ की मान्यता है कि अपने विशाल शरीर के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिलने से वे खत्म हुए होंगे। भीमकाय डायनासोर तो खत्म हो गए किन्तु छोटे जीव अपनी जान बचाने में सफल रहे। इन्हीं जीवों की संतानों से आगे चलकर उन जीव-जंतुओं का विकास हुआ, जिन्हें हम आज देखते हैं। मनुष्य भी इन्हीं में से एक है। वानरों की एक विशेष प्रजाति से मनुष्य के पुरखे का जन्म हुआ।



करीब दो लाख साल पहले आज जैसे इंसानों ने धरती पर क़दम रखा था। वे हम जितने ही चतुर और जिज्ञासु थे। अपनी अनोखी बुद्धिमता से उन्होंने औज़ार बनाना सीख लिया। कल्पनाशीलता के गुण ने उन्हें कहानियां गढ़ने और कहानियों की मदद से संगठित होने की वह क्षमता दी, जिसकी बदौलत आज वे दुनिया पर राज करते हैं।



प्रकृति को नियंत्रित करते हुए मनुष्य ने आज अपनी आबादी को आठ अरब से भी ऊपर पहुंचा दिया है। हमेशा अपने फ़ायदे की सोचने वाले वाले इंसान के सामने अब एक बड़ा संकट मुंह बाए खड़ा है। उसके लालच ने धरती में प्राकृतिक संसाधनों के चुक जाने का ख़तरा पैदा कर दिया है। उसकी जीवनशैली धरती की आबोहवा को बहुत तेज़ी से बिगाड़ रही है। हमने धरती की प्राणदायिनी मिट्टी को और हवा-पानी को बुरी तरह प्रदूषित कर डाला है। एक तरह से हम अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि मनुष्य ने अगर अपनी खाऊ जीवनशैली पर लगाम नहीं लगाई तो एक सदी बाद धरती से जीवन का नामोनिशान मिट जाएगा।





यदि हमें धरती को एक एक मृत ग्रह में बदलने से रोकना है तो खुद पर संयम रखना सीखना होगा। प्रकृति के उपहारों और ऊर्जा का किफ़ायती और कम से कम इस्तेमाल करना होगा। प्रकृति के संसाधन हमारे अकेले के लिए नहीं हैं। इन पर सभी प्राणियों और उनकी भावी पीढ़ियों का भी हक है। यह धरती एक बड़े कुटुंब जैसी है, जिसमें सभी प्राणी ज़रूरी और एक दूसरे एक सहोदर हैं। इसलिए 21वीं सदी में हमें एक विश्व नागरिक की चेतना से धरती को बचाने का संकल्प लेना चाहिए।

एक ही धरती है!

एक ही धरती है, फिर भी
तुम क्यों इतना इतराते हो
अपने कदमों की छापों से
सबकी तसवीर मिटाते हो।

कितनी भूख बढ़ा ली तुमने
कितना तुमको खाना है?
क्यों करते इतना लालच, जब
इक दिन सबको जाना है।

मंत्र मुनाफ़े का पढ़ते वो
हिस्सा सबका लूट रहे
धरती का दम घोंट रहे जो
ख़ुद को सबसे सभ्य कहे!

अरबों गैलेक्सियां हैं नभ में
ग्रह नक्षत्र अनेक हैं
जीवन को जो जन्म दे सके
बस ऐसी धरती एक है।

पालन सबका कर सकती है
हैं धरती में क्षमता-साधन
पर क्या लोभ के दलदल से
निकल सकेगा मानव मन?

